Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 6.471
Volume - 6, Issue - 11, November - 2023 Publication Date: 30/11/2023

DOIs:10.2018/SS/202311008 --:-- Research Paper / Article / Review

किशोरों की संवेगात्मक परिपक्वता पद अभिभवाक-बालक सम्बन्धों के प्रभाव का अध्ययन

डॉ. शिव प्रकाश द्विवेदी
प्राचार्य, बसुन्धरा टीचर्स ट्रेनिंग कालेज, मुजफ्फरपुर, बिहार
Email- dr.spdwivedi1@gmail.com

सारांश : आज का बालक कल का नागरिक है जिसे आने वाले समय में देश की बागडोर सम्हालना है। देश व समाज की प्रगति के लिये आवश्यक है कि बालक के समुचित विकास पर जीवन की प्रारंभिक अवस्थाओं से ही अत्यधिक ध्यान दिया जाये। विकास की सभी अवस्थाओं में किशोरावस्था सबसे महत्वपूर्ण अवस्था है। किशोर के आवेग एवं संवेग अत्यधिक तेजी से परिवर्तित होते हैं फलस्वरूप् किशोरों के व्यवहार को समझना अत्यंत कठिन होता है। व्यक्तित्व निर्माण में परिवार का महत्व सर्वाधिक है। अभिभावकों के स्नेह से वंचित ऐसे बालक जिन्हें स्नोह व प्यार नहीं मिला है वह आक्रामक, निर्दयी, कुसमायोजित, झगड़ालू हो जाते हैंः जो कि परिवार, समाज व राष्ट्र के लिये समस्यात्मक बन जाते है। किशोरों में तीव्र गति से बढ़ रही संवेगात्मक असंतुलन की समस्या एवं लक्ष्यहीनता आज मनोवैज्ञानिकों एवं समाजशास्त्रियों के समक्ष एक चुनौती बन गई है। उद्देश्य1.किशोर बालकों की संवेगात्मक परिपक्वता पर अभिभावक बालक सम्बन्ध के प्रभाव का अध्ययन करना।2.किशोर बालिकाओं की संवेगात्मक परिपक्वता पर अभिभावक-बालक सम्बन्ध के प्रभाव का अध्ययन करना।3.किशोर बालक-बालिकाओं की संवेगात्मक परिपक्वता पर अभिभावक-बालक सम्बन्ध के प्रभाव का अध्ययन करना।चर-स्वतत्र चरः अभिभावक-बालक सम्बन्ध। परतंत्र चरः संवेगात्मक परिपक्वता। परिकल्पना-1.किशोर बालकों की संवेगात्मक परिपक्वता पर अभिभावक-बालक सम्बन्ध का प्रभाव नहीं पाया जाता हैं।2.किशोर बालिकाओं की संवेगात्मक परिपक्वता पर अभिभावक-बालक सम्बन्ध का प्रभाव नहीं पाया जाता हैं।3.किशोर बालक-बालिकाओं की संवेगात्मक परिपक्वता पर अभिभावक-बालक सम्बन्ध का प्रभाव नहीं पाया जाता है। मापन के उपकरण 1.अभिभावक स्वीकृति/अस्वीकृति प्रश्नावली (पी.ए.आर.क्यू.) - रोहनर पी. रोनाल्ड, भारतीय अनुकूलन, डाॅ. जयप्रकाश। 2.संवेगात्मक परिपक्वता मापनी (ई.एम.एस.) - यशवीर सिंह एवं महेश भार्गव। निष्कर्ष 1.स्वीकृत बालकों में अस्वीकृत बालकों की अपेक्षा संवेगिक अस्थिरता, सामाजिक कृसमायोजन, यक्तित्व विघटन तथा नेतृत्व हीनता कम है जबकि सांवेगिक दमन में स्वीकृत तथा अस्वीकृत समूह के बालकों में सार्थक अंतर नहीं है।2.बलिकाओं की संवेगात्मक परिपक्वता के परिणामों में स्वीकृत बालिकाओं में अस्वीकृत बालिकाओं की अपेक्षा सांवेगिक अस्थिरता, सांवेगिक दमन, सामाजिक कुसमायोजन व्यक्तित्व विघटन कम मात्रा में है जबकि स्वीकृत एवं अस्वीकृत बालिकाओं की नेतृत्वहीनता में सार्थक अंतर नहीं है।3.बालक तथा बालिकाओं के संयुक्त परिणामों में स्वीकृत बालक-बालिकाओं में अस्वीकृत बालक तथा बालिकाओं की अपेक्षा संवेगात्मक अधिक मात्रा में पाई गई।

कुंजी शब्द : किशोरों की संवेगात्मक, परिपक्वता पद, अभिभवाक-बालक सम्बन्ध, सम्बन्धों के प्रभाव ।

1. प्रस्तावना:

आज का बालक कल का नागरिक है जिसे आने वाले समय में देश की बागडोर सम्हालना है। देश व समाज की प्रगति के लिये आवश्यक है कि बालक के समुचित विकास पर जीवन की प्रारंभिक अवस्थाओं से ही अत्यधिक ध्यान दिया जाये। विकास की सभी अवस्थाओं में किशोरावस्था सबसे महत्वपूर्ण अवस्था है। किशोर के आवेग एवं संवेग अत्यधिक तेजी से परिवर्तित होते हैं फलस्वरूप् किशोरों के व्यवहार को समझना अत्यंत कठिन होता है। व्यक्तित्व निर्माण में परिवार का महत्व सर्वाधिक है। परिवार में उसे सुरक्षा मिलती है, अभिभावकों के साथ उनके अच्छे सम्बन्धों से उसे आत्मविश्वास एवं आत्मबल की ऊर्जा मिलती है। अभिभावकों की स्वीकृत अभिवृति किशोरों में सकारात्मक मूल्यों को स्फुटित करती है तथा उनकी अस्वीकृति किशोरों में नमारात्मक मूल्यों को जन्म देती है। सकारात्मक मूल्य किशोरों में सृजनात्मक शक्ति का विकास करते हैं तथा नकारात्मक मूल्य विग्रह एवं तनाव पैदा करते हैं। अभिभावक-बालक सम्बन्ध जितने सरल, सुदृढ़ होते हैं बालक उतना ही अपने आपको सहज पाते हैं।

हमेशा से ही प्रत्येक समाज को विकसित होने के लिए एक अच्छे एवं सांवेगिक रूप से परिपक्व व्यक्तित्व वाले व्यक्ति की आवश्यकता रही है जिससे वे समाज व राष्ट्र के विकास में अपना योगदान दे सकें क्योंकि संवेगात्मक रूप से परिपक्व व्यक्ति ही जीवन की हर कसौटी पर खरा उतर सकता है। सिन्हा एस. पी. एवं माथुर के. (1990) ने अभिभावकीय स्वीकृति-अस्वीकृति का बालकों की

कुंठा एवं आक्रामकता पर प्रभाव का अध्ययन किया, परिणामों से स्पष्ट हुआ है कि अस्वीकृति बालक-बालिकाओं में समस्याएँ भी अधिक पाई गईं। सेंगर एस.एस. (1996-97) ने अपने अध्ययन के निष्कर्ष में पाया कि अस्वीकृति माता-पिता के बालकों के व्यक्तित्व में उच्च नकारात्मक आत्म यथाथ्र्यता, आक्रमक भावना, गैर जिम्मेदारी प्रवृत्तियाँ स्वीकृत बालकों की अपेक्षा अधिक पाई गई तथा ऐसे बालकों का समाज में समायोजन अच्छा नहीं होता है। पाधी, ज्योति, मोयी, दाश, ए, श्रीकांत (1998) ने किशोरों की दक्षता पर अभिभावकों की अभिवृत्ति के सम्बन्ध का अध्ययन किया। उन्होने अपने अध्ययन में पाया कि जिन किशोरों को उनके अभिभावकों द्वारा प्रोत्साहन मिला। उन किशोरों में अधिक क्षमता पाई गई। कौसर शबाना एवं तबस्सुम वहीदा (1990) ने अपने अध्ययन में पाया कि अभिभावकों द्वारा स्वीकृत बालक-बालिकाओं में संवेगात्मक स्थिरता एवं सामाजिकता तथा जिम्मेदारी का भाव अधिक था। इसके विपरीत परिणाम अभिभावकों द्वारा अस्वीकृत बालक-बालिकाओं में देख्ेा गये। मोहम्मद अख्तर हुसैन (2003) ने अपने अध्ययन में पाया कि प्रजातांत्रिक प्रणाली वाले अभिभावकों के बच्चों में प्रभुत्वशाली अभिभावकों की अपेक्षा अधिक अच्छा समायोजन होता है ऐसे किशोरों में आक्रमणकारी प्रवृत्ति कम पाई जाती है।

बालक के जीवन में शैशवावस्था से लेकर किशोरावस्था तक एक ऐसा काल है जिसमें बालक के सर्वांगीण विकास की आधारशिला स्ाि्ापति होती हैं। किशोरावस्था में विकास की गति तीव्र होती है जिसके कारण समायोजन की समस्या बढती है। मनोवैज्ञानिकों ने किशोरावस्था को जीवन का सबसे महत्वपूर्ण एवं कठिन समय कहा है। यदि इस अवस्था में विवेक और संयम से कार्य नहीं लिया गया तो किशोरावस्था असंतुलित हो जाती है और किशोर को सम्पूर्ण जीवन इसका परिणाम भोगना पड़ता है। बालक को यदि परिवार से अभिभावकों के प्रेम, विश्वास एवं आत्मीयता में कमी महसूस होती है और तब वह एकाकीपन से इता पीड़ित हो जाता है कि तनाव के इस चरमोत्कर्ष पर उसमें न तो विवेक रहता है और न ही सामाजिकता। अभिभावकों के स्नेह से वंचित ऐसे बालक जिन्हें स्नोह व प्यार नहीं मिला है वह आक्रामक, निर्दयी, कुसमायोजित, झगड़ालू हो जाते हैं्ं जो कि परिवार, समाज व राष्ट्र के लिये समस्यात्मक बन जाते है। किशोरों में तीव्र गति से बढ़ रही संवेगात्मक असंतुलन की समस्या एवं लक्ष्यहीनता आज मनोवैज्ञानिकों एवं समाजशास्त्रियों के समक्ष एक चुनौती बन गई है।

2. उद्देश्य :

- किशोर बालकों की संवेगात्मक परिपक्वता पर अभिभावक बालक सम्बन्ध के प्रभाव का अध्ययन करना।
- किशोर बालिकाओं की संवेगात्मक परिपक्वता पर अभिभावक-बालक सम्बन्ध के प्रभाव का अध्ययन करना।
- किशोर बालक-बालिकाओं की संवेगात्मक परिपक्वता पर अभिभावक-बालक सम्बन्ध के प्रभाव का अध्ययन करना।

2.1 चर :

स्वतत्र चर ः अभिभावक-बालक सम्बन्ध।

परतंत्र चर ः संवेगात्मक परिपक्वता।

2.2 परिकल्पना :

- किशोर बालकों की संवेगात्मक परिपक्वता पर अभिभावक-बालक सम्बन्ध का प्रभाव नहीं पाया जाता हैं।
- किशोर बालिकाओं की संवेगात्मक परिपक्वता पर अभिभावक-बालक सम्बन्ध का प्रभाव नहीं पाया जाता हैं।
- किशोर बालक-बालिकाओं की संवेगात्मक परिपक्वता पर अभिभावक-बालक सम्बन्ध का प्रभाव नहीं पाया जाता है।

2.3 न्यादर्श

तलिका क्रमांक - 1

अभिभावकों की स्वीकृति-अस्वीकृति सम्बन्धी न्यादर्श तालिका

अभिभावकों की स्वीकृति/अस्वीकृति	बालक	बालिकाएँ	योग
स्वीकृति	70	70	140
अस्वीकृति	70	70	140
योग	140	140	280

2.4 मापन के उपकरण

1.अभिभावक स्वीकृति/अस्वीकृति प्रश्नावली (पी.ए.आर.क्यू.) - रोहनर पी. रोनाल्ड, भारतीय अनुकूलन, डॉ. जयप्रकाश।

2.संवेगात्मक परिपक्वता मापनी (ई.एम.एस.) - यशवीर सिंह एवं महेश भार्गव।(उच्च प्राप्तांक संवेगात्मक अस्थिरता को प्रदर्शित करते हैं)

3. अनुसंधान विधि :

कक्षा ग्यारहवीं एवं बारहवीं के हिन्दी माध्यम के बालक-बालिकाओं पर अभिभावक पर अभिभावक स्वीकृति/अस्वीकृति मापनी का प्रशासन पर फलांकन के पश्चात् स्वीकृति/अस्वीकृति बालक-बालिकाओं के 70-70 के समूह बनाये गये जिन पर संवेगात्मक परिपक्वता का प्रशासन कर फलांकन किया गया। प्रस्तुत शोध पत्र के लिये केवल हिन्दी माध्यम के कक्षा ग्यारहवीं एवं बारहवीं के बालक-बालिकाओं को लिया गया हैं।

परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

न्यादर्श पर परीक्षणों के प्रशासन के उपरान्त जो परिणाम प्राप्त हुए हैं उनका विश्लेषण निम्नानुसार किया गया है:

तलिका क्रमांक - 2

स्वीकृत एवं अस्वीकृत बालकों की संवेगात्मक परिपक्वता के विभिन्न कारकों सम्बन्धी परिणाम

संवेगात्मक परिपक्वता के कारक	अभिभावक स्वीकृति/अस्वीकृति	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	त्रुटि	माध्यमानक अनुपात	क्रांतिक	सार्थकता
सांवेगिक अस्थिरता	स्वीकृत	70	20.81	6.31	0.75	3.71	ढ 0.01	
	अस्वीकृत	70	24.54	7.14	0.85			
सांवेगिक दमन	स्वीकृत	70	21.50	6.87	0.82	1.84	झ 0.05	
	अस्वीकृत	70	23.24	6.27	0.75			
सामाजिक कुसमायोजन	स्वीकृत	70	18.70	5.05	0.6	2.04	ढ 0.05	
	अस्वीकृत	70	20.53	5.22	0.66			
व्यक्तित्व विघटन	स्वीकृत	70	15.67	4.93	0.59	4.29	ढ 0.01	
	अस्वीकृत	70	19.70	3.12	0.73			
नेतृत्व हीनता	स्वीकृत	70	14.86	4.83	0.58	2.90	ढ 0.01	
	अस्वीकृत	70	17.86	5.74	0.69			

स्वतंत्रता कं अंश: 138 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान - 1.98
0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान - 2.61

स्वीकृत एवं अस्वीकृत बालकों की संवेगात्मक परिपक्वता के विभिन्न कारकों सम्बन्धी उपरोक्त परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि स्वीकृत बालकों में अस्वीकृत बालकों की अपेक्षा सांवेगिक अस्थिरता, सामाजिक कुसमायोजन, व्यक्तित्व विघटन तथा नेतृत्व हीनता कम मात्रा में है जगकि स्वीकृत बालकों एवं अस्वीकृत बालकों के सांवेगिक दमन में सार्थक अंतर नहीं है।

तलिका क्रमांक - 3

स्वीकृत एवं अस्वीकृत बालिकाओं की संवेगात्मक परिपक्वता के विभिन्न कारकों सम्बन्धी परिणाम

संवेगात्मक परिपक्वता के कारक	अभिभावक स्वीकृति/अस्वीकृति	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	त्रुटि	माध्यमानक अनुपात	क्रांतिक	सार्थकता
सांवेगिक अस्थिरता	स्वीकृत	70	21.51	7.13	0.85	2.96	ढ 0.01	
	अस्वीकृत	70	24.54	7.14	0.85			
सांवेगिक दमन	स्वीकृत	70	18.77	6.46	0.77	3.10	झ 0.01	
	अस्वीकृत	70	22.54	7.87	0.94			
सामाजिक कुसमायोजन	स्वीकृत	70	16.21	5.45	0.65	3.11	ढ 0.01	
	अस्वीकृत	70	19.43	6.70	0.80			
व्यक्तित्व विघटन	स्वीकृत	70	14.89	6.18	0.74	2.53	ढ 0.05	
	अस्वीकृत	70	17.67	6.85	0.82			
नेतृत्व हीनता	स्वीकृत	70	14.10	5.31	0.63	1.41	ढ 0.01	
	अस्वीकृत	70	15.41	5.74	0.69			

स्वतंत्रता कं अंश: 138 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान - 1.98

0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान - 2.61

स्वीकृत एवं अस्वीकृत बालिकाओं की संवेगात्मक परिपक्वता के कारकों सम्बन्धी उपरोक्त परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि स्वीकृत बालिकाओं की अपेक्षा सांवेगिक अस्थिरता सांवेगिक दमन, सामाजिक कुसमायोजन तथा व्यक्तित्व विघटन कम मात्रा में है जबकि स्वीकृत एवं अस्वीकृत बालिकाओं की नेतृत्व हीनता में सार्थक अंतर नहीं है। उपरोक्त परिणाम ग्राफ क्रमांक 2 में प्रदर्षित किये गये है।

तलिका क्रमांक - 4

स्वीकृत एवं अस्वीकृत बालक-बालिकाओं की संवेगात्मक परिपक्वता के विभिन्न कारकों सम्बन्धी परिणाम

संवेगात्मक परिपक्वता के कारक	अभिभावक स्वीकृति/अस्वीकृति	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	त्रुटि	माध्यमानक अनुपात	क्रांतिक	सार्थकता
सांवेगिक अस्थिरता	स्वीकृत	140	20.19	6.76	0.57	4.67	ढ 0.01	
	अस्वीकृत	140	24.83	7.14	0.61			

सांवेगिक	स्वीकृत	140	20.14	6.80	0.58		3.49	झ 0.01
दमन	अस्वीकृत	140	23.04	7.13	0.60			
सामाजिक	स्वीकृत	140	17.46	5.40	0.46	3.64	ढ 0.01	
कुसमायोजन	अस्वीकृत	140	19.98	6.16	0.52			
व्यक्तित्व	स्वीकृत	140	15.28	5.60	0.47		4.67	ढ 0.01
विघटन	अस्वीकृत	140	18.69	6.58	0.56			
नेतृत्व	स्वीकृत	140	14.48	5.09	0.43	2.99	ढ 0.01	
हीनता	अस्वीकृत	140	16.44	5.83	0.49			

स्वतंत्रता कं अंश: 278 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान - 1.97

0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान - 2.59

स्वीकृत एवं अस्वीकृत बालक-बालिकाओं की संवेगात्मक परिपक्वता के विभिन्न कारकों सम्बन्धी उपरोक्त परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि स्वीकृत बालक-बालिकाओं में अस्वीकृत बालक-बालिकाओं की अपेक्षा संवेगात्मक अस्थिरता सामाजिक कुसमायोजन, व्यक्तित्व विघटन, नेतृत्वहीनता तथा सांवेगिक दमन कम मात्रा में है।

तलिका क्रमांक - 5

स्वीकृत एवं अस्वीकृत बालकों, बालिकाओं तथा बालक एवं बालिकाओं की संवेगात्मक परिपक्वता सम्बन्धी परिणाम

समूह	अभिभावक स्वीकृति/अस्वीकृति	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	माध्यमानक त्रुटि	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता
बलक	स्वीकृत	70	91.04	22.14	2.65	3.81	ढ 0.01
	अस्वीकृत	70	105.77	23.60	2.82		
बालिका	स्वीकृत	70	85.49	25.16	3.01	3.32	झ 0.01
	अस्वीकृत	70	100.17	27.16	3.25		
बालक एवं बालिका	स्वीकृत	140	88.26	23.86	2.02	4.97	ढ 0.01
	अस्वीकृत	140	102.97	25.59	2.16		

स्वतंत्रता कं अंश: 138 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान - 1.97

स्वतंत्रता कं अंश: 278 0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान - 2.61

0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान - 1.97

0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान - 2.59

उपरोक्त परिणामों के आधार पर यह निष्कर्ष स्वरुप कहा जा सकता है कि स्वीकृत बालकों, स्वीकृत बालिकाओं तथा स्वीकृत बालक एवं बालिकाओं में अस्वीकृत बालकों, बालिकाओं तथा बालक एवं बालिकाओं की अपेक्षा संवेगात्मक परिपक्वता अधिक मात्रा में हैं।

4. विवेचना:

अभिभावकों द्वारा स्वीकृत बालकों की संवेगात्मे परिपक्वता के विभिन्न कारकों से सम्बन्धित परिणामों से स्पष्ट हो जाता है कि सांवेगिक अस्थिरता, व्यक्तित्व विघटन, नेतृत्वहीनता एवं सामाजिक कृसमायोजन स्वीकृत बालकों में अस्वीकृत बालकों की अपेक्षा कम है। अभिभावकों द्वारा स्वीकृत एवं अस्वीकृत समूह के सांवेगिक दमन कारक में कोई अन्तर नहीं है। इसी प्रकार अभिभावकों द्वारा स्वीकृत एवं अस्वीकृत बालिकाओं में सांवेगिक परिक्वता के विभिन्न कारकों से सम्बन्धित परिणामों से स्पष्ट होता है कि सांवेगिक अस्थिरता, व्यक्तित्व विघटन, सांवेगिक दमन एवं सामाजिक कुसमायोजन, स्वीकृत बालिकाओं में अस्वीकृत बालिकाओं की अपेक्षा कम मात्रा में है जबकि नेतृत्वहीनता में दोनों समूहों में कोई अन्तर नहीं है। बालक एवं बालिकाओं के सामाजिक कुसमायोजन, व्यक्तित्व विघटन एवं नेतृत्वहीनता अस्वीकृत बालक'बालिकाओं की अपेक्षा कम है। एक प्रकार उपरोक्त परिणामों से स्पष्ट होता है कि अभिभावकों की स्वीकृति एवं अस्वीकृति, बालक-बालिकाओं की संवेगात्मक परिपक्वता के विभिन्न कारकों को प्रभावित करती है। इनमें एक ओर जहाॅ अभिभावकों के दृष्टिकोण का महत्व है वही दूसरी ओर यह भी महत्वपूर्ण है कि यदि बालकों को सामाजिक स्वीकृति नहीं मिलती और न उन्हें यह अवसर मिलता है कि वह अपने बारे में कुछ बता सकें तो ऐसे में सांवेगिक अस्थिरता का होना स्वाभाविक है। साथ ही माता-पिता की बालकों से अति अपेक्षाएॅ तथा माता-पिता के आपसी तनावपूर्ण सम्बन्ध भी बालक की सांवेगिक अस्थिरता के लिये उत्तरदायी हो सकते हैं।

बालिकाओं की संवेगात्मे परिपक्वता पर भी अभिभावकों के व्यक्तित्व, परिवार की स्थिति अभिभावकीय अभिवृत्ति, ज्ञव-प्रकाशन के अवसर उपलब्ध न होना तथा माता-पिता की अतिअपेक्षाएॅ, आदि बातें प्रभाव डालती हैं। सिन्हा एवं एस.पी. माथुर (1990) ने अपने अध्ययन में यह पाया कि अस्वीकृत बालिकाओं में कुंठा और आक्रामकता की भावना अधिक पाई जाती है। कौसर, षबाना तबस्सुम (1990) के परिणाम भी यह बताते हैं कि अभिभावकों की स्वीकृति, संवेगात्मे स्थिरता को सकारात्मक रुप से प्रभावित करती है। ज्योतिर्मयी पाधी (1998) के अध्ययन परिणामों से भी यह सिद्व होता है कि अभिभावकों की स्वीकारात्मक अभिवृत्ति बालकों में अधिक क्षमता के विकास में सहायक होती है। बालक-बालिकाओं के सम्मिलित परिणामों में अभिभावक की स्वीकृति व अस्वीकृति का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित हो रहा है। यदि अभिभावकों की बालकों के प्रति सकारात्मक अभिवृति होती है तो ऐसे परिवारों में बालक-बालिकाओं में संतुष्टि एवं प्रसन्नता का भाव होता हैं। इस परिवार के बालकों को स्वप्रकाषन की सुविधा भी मिलती है जिससे ऐसे परिवार में पले बालक-बालिकाओं में संतुष्टि एवं प्रसन्नता का भाव होता है। यदि परिवार के बालकों को स्वप्रकाषन की सुविधा मिलती है तो ऐसे परिवार में पले बालक-बालिकाओं की संवेगात्मक परिपक्वता निश्चित ही उन बालक-बालिकाओं की अपेक्षा प्रभावी एवं श्रेष्ठ होती है जिन्हें पारिवारिक वातावरण की प्रतिकूल परिस्थिति में जीवन-यापन करना पड़ता है। एस.एस. सेंगर (1996-97) के अध्ययन परिणाम भी इस तथ्य को स्वीकार करते हैं कि स्वीकृत माता-पिता के बालकों में अस्थिरता, आक्रामकता की भावना एवं गैर जिम्मेदारी की प्रवृत्ति अस्वीकृत बालकों की अपेक्षा कम पाई जाती है। इसी प्रकार मोहम्मद अख्तर हुसैन (2003) के अध्ययन परिणाम भी यह दर्शाते है कि परिवार में अभिभावकों की प्रजातांत्रिक भावतना, जो बालक-बालिकाओं को अपने विचार प्रकट करने की स्वतंत्रता, समानता के अवसर एवं सुविधाएॅ प्रदान करते हैं, का बालक-बालिकाओं के समायोजन पर प्रभाव पड़ता है ऐसे बालकों का समायोजन उत्तम होता है तथा उनमें आक्रमणकारी प्रवृत्ति भी कम पाई जाती है।

5. निष्कर्ष :

1.स्वीकृत बालकों में अस्वीकृत बालकों की अपेक्षा संवेगिक अस्थिरता, सामाजिक कृसमायोजन, यक्तित्व विघटन तथा नेतृत्व हीनता कम है जबकि सांवेगिक दमन में स्वीकृत तथा अस्वीकृत समूह के बालकों में सार्थक अंतर नहीं है।

2.बलिकाओं की संवेगात्मक परिपक्वता के परिणामों में स्वीकृत बालिकाओं में अस्वीकृत बालिकाओं की अपेक्षा सांवेगिक अस्थिरता, सांवेगिक दमन, सामाजिक कुसमायोजन व्यक्तित्व विघटन कम मात्रा में है जबकि स्वीकृत एवं अस्वीकृत बालिकाओं की नेतृत्वहीनता में सार्थक अंतर नहीं है।

3.बालक तथा बालिकाओं के संयुक्त परिणामों में स्वीकृत बालक-बालिकाओं में अस्वीकृत बालक तथा बालिकाओं की अपेक्षा संवेगात्मक अधिक मात्रा में पाई गई।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1. भार्गव डॉ. महेश; विशिष्ट बालक-उनकी शिक्षा एवं पुनर्वास, एच.पी. भार्गव बुक हाऊस, 'भार्गव भवन' 4/230, कचहरी घाट, आगरा, (पृ.सं.261-263, 317-321)।
2. बिष्ट, आभारानी; विशिष्ट बालक-उनका मनोविज्ञान और शिक्षा, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा (1989-90) ।
3. जरसील्ड, ए.टी.; किशोर मनोविज्ञान, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी (हिन्दी संस्करण), (1977) पटना (पंृ 241-245)।
4. जायसवाल, डाॅ0 सीताराम; सर्वागीण बाल-विकास, द्वितीय संस्करण, आर्य बुक डिपो, करोल (1996)बाग, नई दिल्ली (पृं.सं. 210-211)।
5. मणि, शारदा (1993); किशोर मनोविज्ञान, प्रथम संस्करण (हिन्दी माध्यम), दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली (पृं.सं. 122-134, 144-151)।